

## शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

\*<sup>1</sup> डॉ. निशा पांडेय एवं डॉ. नितिन बाजपेयी

\*<sup>1</sup> संविलियन विद्यालय राधन वि.ख. बिल्हौर, कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश, भारत।

<sup>2</sup>सहायक प्रोफेसर, महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हरदोई, उत्तर प्रदेश, भारत।

### Article Info.

E-ISSN: **2583-6528**

Impact Factor (SJIF): **6.876**

Peer Reviewed Journal

Available online:

[www.alladvancejournal.com](http://www.alladvancejournal.com)

Received: 16/ June/2025

Accepted: 16/July/2025

### सारांशः

प्रस्तुत शोध शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से कानपुर नगर व कानपुर देहात के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 की 400 छात्राओं पर डॉ. बी. पी. शर्मा एवं डॉ. अनुराधा गुप्ता के शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी सूची को प्रशासित किया गया। प्राप्त अंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर पाया जाता है। शहरी क्षेत्रों की छात्राओं में ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं की तुलना में शैक्षिक आकांक्षा स्तर उच्च पाया गया और यह अन्तर वातावरण के प्रभाव को दर्शाता है।

### \*Corresponding Author

डॉ. निशा पांडेय

संविलियन विद्यालय राधन वि.ख. बिल्हौर,  
कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश, भारत।

**मुख्य शब्दः** छात्रायें, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शैक्षिक आकांक्षा स्तर

### प्रस्तावना:

किसी भी समाज के विकास स्तर को समझने के लिए उसमें स्त्रियों की स्थिति का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। स्त्री कुल जनसंख्या का आधा भाग होती है। स्त्री जाति पृथ्वी पर नैतिकता, मानवता और सभ्यता के विकास का अपरिमित स्रोत रही है। वैदिक काल से ही स्त्री जाति को माता, पत्नी और स्त्री के विविध सम्बन्धों में पूज्या माना जाता रहा है। मनु का कथन है-

“यत् र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:”

अर्थात् जहाँ स्त्रियों की आदर होता है वहा देवता प्रसन्न रहते हैं और जहाँ उनका आदर नहीं होता है वहीं सारे कार्य और प्रयत्न विफल हो जाते हैं और जहाँ स्त्रियाँ उदासीन और दुःखी जीवन व्यतीत करती हैं, उस कुटुम्ब या देश की उन्नति की कोई आशा नहीं हो सकती है। माता के रूप में सुसंस्कृत जननी सुसंस्कृत बालक को जन्म देती है और उसकी उसकी शिक्षा के लिए ऐसा वातावरण सृजन करती है कि वह वास्तव में देवतुल्य सामर्थ्य ग्रहण कर लेती है।

हमारी शिक्षा व्यवस्था में आज भी कई ऐसी कमियाँ हैं जिसके कारण शिक्षित स्त्री सामाजिक परिवेश में ठीक रूप से समायोजित नहीं हो

पाती है। हमारे समाज में शिक्षित नारी का स्थान अभी तक समुचित रूप से निश्चित नहीं हो पाया है, इसका कारण यही हो सकता है कि स्त्री शिक्षा को या तो सामाजिक प्रतिष्ठा या आर्थिक सुरक्षा के दृष्टिकोण से देखा जा रहा है। उसके व्यक्तित्व विकास तथा उससे निर्मित सामाजिक भूमिकाओं को भली भाँति निबाहने की क्षमता की दृष्टि से नहीं।

**अध्ययन की आवश्यकता:-** विभिन्न शिक्षा आयोग ने अपनी संस्कृतियों में कहा है कि स्त्रियों के लिए भी पुरुषों के समान पाठ्यक्रम तथा एक-एक पृथक विशिष्ट पाठ्यक्रम अर्थात् गृह विज्ञान, गृह अर्थशास्त्र और गृह-प्रबन्ध, ललित कलाएं जैसे विषय रखे जाने चाहिए। कोठारी आयोग ने सुझाव दिया है कि स्त्रियों को स्त्रियोचित पाठ्यक्रम तो अवश्य मिलाना चाहिए परन्तु उन्हें इस बात में स्वतन्त्रता होनी चाहिए कि वह किस पाठ्यक्रम का चयन करती है। उन पर उपरोक्त विषयों को लादा नहीं जाना चाहिए अतः स्पष्ट है कि स्त्रियाँ भी पुरुषों के पाठ्यक्रम ग्रहण करके कुशल शिक्षिका, कुशल चिकित्सक, योग्य अभियन्ता, वैज्ञानिक और समाज सुधारक बन सकती हैं। अतः उन्हें विषय चयन की पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिये। इस हेतु वह विज्ञान तथा गणित जैसे विषयों का चुनाव भी स्वेच्छापूर्वक कर सकें।

शहर और गाँव में अपेक्षाकृत शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति जागरूकता तथा शिक्षा की दर में वृद्धि हुई है परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के क्षेत्र में यह वृद्धि दर अभी भी कम है। कारण सुविधाओं की अल्पता होना। उनमें शिक्षा के प्रति कम जागरूकता होना, कम शैक्षिक आकांक्षा स्तर होना।

विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में शहरी क्षेत्र की बालिकाएं बालकों के समान बराबरी करने का प्रयास निरन्तर कर रही हैं तथा उनमें सफलता मी प्राप्त कर रही हैं। उनके आदर्श अब द्रोपदी मुर्मु, सुनीता विलियम्स, कल्पना चावला, इन्दिरा नूर, सोफिया कुरैशी, व्योमिका सिंह जैसी महिलाएं होने लगी हैं।

आज आवश्यकता है कि ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं को जागरूक कर तथा उनके माता-पिता को प्रेरित कर उन्हें वह सभी सुविधाएं दी जाए जिससे कि उनमें भी उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर का प्रादुर्भाव हो और वह भी राष्ट्र की समृद्धि में अपना प्रत्येक क्षेत्र में अपना बराबर योगदान दे सके।

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शोध हेतु निम्नलिखित समस्या कथन का चुनाव किया गया-

“शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।”

## प्रत्ययों का स्पष्टीकरण

- 1. शहरी क्षेत्र:** शहरी क्षेत्र वे क्षेत्र होते हैं, जहाँ जनसंख्या घनत्व ज्यादा होता है और मानवीय सुविधाएं आसानी से उपलब्ध होती हैं। शहरी क्षेत्रों में रोजगार के ज्यादा अवसर होते हैं। शहरी क्षेत्रों में उद्योग, बड़ी आवासीय बस्तियाँ, बिजली और सार्वजनिक परिवहन जैसी सुविधाएं होती हैं।
- 2. ग्रामीण क्षेत्र:** ग्रामीण क्षेत्र, शहरी क्षेत्रों से बाहर का वह क्षेत्र होता है जहाँ जनसंख्या घनत्व कम होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर कम घर और लोग होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि गतिविधियाँ ज्यादा होती हैं।
- 3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय:** उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से तात्पर्य ऐसे विद्यालय या विद्यालय के भाग से है जहाँ 10 वीं से 12वीं तक की पढ़ाई होती है।
- 4. शैक्षिक आकांक्षा स्तर:** किसी लक्ष्य या मूल्य आदि को प्राप्त करने की इच्छा आकांक्षा कहलाती है तथा इन लक्ष्यों और मूल्यों के प्रति व्यक्ति की इच्छा की तीव्रता या स्तर आकांक्षा स्तर है।

आकांक्षा स्तर को इसकी प्रकृति के कारण संज्ञानात्मक अथवा आत्मभिप्रेरणात्मक कहा जाता है। प्रत्येक व्यक्ति में आकांक्षा स्तर भिन्न-भिन्न पाया जाता है। इसी प्रकार जब व्यक्ति शिक्षा के किसी स्तर पर पहुँचने का लक्ष्य निर्धारित करता है तथा उस तक पहुँचने का प्रयासरत रहता है तो उसे उसकी शैक्षिक आकांक्षा स्तर कहते हैं।

## सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

- अवस्थी, वन्दना (2002):** ने अपने शोध अध्ययन “ए कोरिलेशन स्टडी ऑफ इन्टेलीजेन्स, एंग्जाइटी, लेवल आफ ऐसपिरेशन, स्टडी हैविट, सेटिंग इकोनोमिक स्टेट्स एण्ड कल्चरल सेटिंग आफ हाई एण्ड लो एचीवर्स आफ हाईस्कूल आफ कानपुर नगर एण्ड कानपुर देहात” में पाया कि उच्च उपलब्धिकर्ता समूह में व्यक्तित्व के धनात्मक गुण, बुद्धि, उत्कृष्टा, आकांक्षा स्तर और सामाजिक आर्थिक पहलू निम्न उपलब्धिकर्ता समूह की अपेक्षा अधिक विकसित पाये गये तथा दोनों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि उच्च उपलब्धिकर्ता समूह में उच्च व्यक्तित्व, उच्च बुद्धि, उच्च महत्वाकांक्षा, उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर तथा श्रेष्ठ स्वाध्याय आदतें पायी गयीं।

- शर्मा, अंजलि (2005):** ने अपने शोध अध्ययन ”लेवल आफ ऐसपिरेशन ऑफ हाई एचीवर्स एण्ड लो एचीवर्स” जो कि आगरा शहर के पाँच इन्टरमीडिएट कालेज के 149 हाई एचीवर्स तथा 151 लो एचीवर्स विद्यार्थियों पर किया गया, में पाया कि विभिन्न समूहों, यथा (1) हाईएचीवर्स और लो एचीवर्स (2) हाई एचीवर्स लड़के और लो एचीवर्स लड़कियाँ (3) हाई एचीवर्स लड़के और लो एचीवर्स लड़कियाँ (4) लो एचीवर्स लड़के और लो एचीवर्स लड़कियों के आकांक्षा स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- शर्मा, प्रेरणा (2006):** ने अपने अध्ययन ”लेवल आफ ऐसपिरेशन एण्ड होम कन्फीशन आफ डिसट्रीब्यूटर लर्नर इन द कान्टेक्स्ट आफ देयर सेक्स” जो कि उन्होंने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के 300 विद्यार्थियों (150 पुरुष एवं 150 महिलाएँ) पर किया और पाया कि दूरस्थ शिक्षा के पुरुष व छात्रों में महिला छात्राओं की अपेक्षा अधिक आकांक्षा स्तर पाया गया परन्तु दूरस्थ शिक्षा की महिला छात्राओं की पारिवारिक स्थिति पुरुष छात्रों की अपेक्षा अधिक अच्छी पायी गयी।
- अहमद, अकील, हामिद, मुद्दसिर, मलिक एवं गैने, एम. वाई, (2012):** ने अपने शोध ”सेल्फ कास्पेट, लेवल ऑफ एस्पिरेशन एण्ड एकेडमिक एचीवमेन्ट ऑफ फिजकली चेलेन्जड, एण्ड नार्मल स्टूडेण्ट एट सेकेण्डरी लेवल इन डिस्ट्रिक्ट, बारामुला” जो कि जम्मू कश्मीर के बारामुला जिले के माध्यमिक स्तर के 300 विद्यार्थियों जिनमें 150 सामान्य एवं 150 विकलांग विद्यार्थियों पर अनियत विधि से किया गया तथा निष्कर्षतः पाया गया कि माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य विद्यार्थियों में विकलांग विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च वास्तविक स्व, आकांक्षा स्तर और शैक्षिक उपलब्धि पायी गयी जबकि विकलांग विद्यार्थियों में सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च आदर्श स्व (जो किसी व्यक्ति की आकांक्षाओं के अनुसार परिभाषित होता है) यह एक आत्म मार्गदर्शक है) पाया गया।
- पालीवाल, अंश एवं राठी, नन्दा (2016):** ने अपने शोध अध्ययन एकेडमिक परफॉरमेंस एज ए फंक्शन ऑफ लेवल ऑफ एस्पिरेशन एण्ड जेन्डर-ए कम्प्रेटिव स्टडी एम्गस्ट डिफरेन्ट स्ट्रीम्स ऑफ एजुकेशन” जोकि इंजीनियरिंग, प्रबन्धन और लॉ के 717 विद्यार्थियों (358 पुरुष और 358 महिलाओं) पर किया गया, जिनकी आयु वर्ग 18 से 19 वर्ष की थी, में पाया कि इंजीनियरिंग और प्रबन्धन के उच्च उपलब्धिकर्ता और निम्न उपलब्धिकर्ता समूह के छात्रों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। जबकि लॉ के उच्च एवं निम्न आकांक्षा स्तर के छात्रों विद्यार्थियों के मध्य सार्थक अन्तर पाया जाता है। तथा इंजीनियरिंग के लड़के और लड़कियों के आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जबकि प्रबन्धन और लॉ के लड़कियों और लड़कों के आंकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक अन्तर पाया गया।
- शर्मा, देविका, सिंह, अमीषा (2017):** ने अपने शोधपत्र अध्ययन “एजुकेशनल एस्पिरेशन ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू एकेडमिक एचीवमेन्ट” जो कि जम्मू जिले के कक्षा 9 के 600 विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया। शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापने के लिए डॉ. बी.पी. शर्मा और डॉ. अनुराधा गुप्ता की मापनी अनुसूची को प्रशासित किया गया और निष्कर्ष रूप में पाया गया कि विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अत्यधिक निम्न सम्बन्ध है।
- राजा, सेनथिल और पाण्डियन, यू. (2018):** ने अपने शोध पत्र अध्ययन “स्टडी ऑन लेवल ऑफ एजुकेशनल एस्पिरेशन आफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स” जो कि तमिलनाडु के विल्लुपुरम जिले के 819 विद्यार्थियों (420 पुरुष और 399 महिलायें) पर किया गया

- और पाया गया कि पुरुष विद्यार्थियों और महिला विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है और हाईस्कूल के समुदाय (OC/BC/MBC/SC&ST) के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- कृष्ण, के., नाथ शंभू, एवं कुमार, बुशन (2024):** ने अपने शोध अध्ययन “अनुसूचित जाति के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन” जोकि सरकारी स्कूलों के कक्षा 9वीं और 10वीं के 760 छात्रों पर याशमीन गनी खान द्वारा विकसित शैक्षिक आकांक्षी मापनी उपकरण द्वारा किया गया में निष्कर्ष रूप में पाया गया कि अनुसूचित जाति-के माध्यमिक विद्यालय के अधिकांश छात्र क्रमशः पुरुष और महिला दोनों लिंग में शैक्षिक आकांक्षा के औसत वर्थाधारी स्तरों के अंतर्गत आते हैं और शैक्षिक आकांक्षा के स्तर पर अनुसूचित जाति के माध्यमिक विद्यालय के पुरुष और महिला छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
  - दास, अंकिता एवं राजेश, वी.आर. (2024):** ने अपने अध्ययन “स्नातक छात्रों के बीच शैक्षिक आकांक्षा पर एक अध्ययन” जो कि पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले के 100 स्नातक छात्रों पर यासीन गनी खान द्वारा विकसित शैक्षिक आकांक्षा परीक्षण का उपयोग कर किया गया, में परिणामस्वरूप पाया गया कि स्नातक छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा में उनके लिंग, धर्म, - आवासीय इलाके, परिवार के प्रकार, पिता और माता-की शैक्षिक स्थिति, पिता और माता के व्यवसाय, शैक्षणिक स्टीम और कालेज के प्रकार के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था।

## शोध विधि

**शोध के उद्देश्य:** शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।

**शोध की परिकल्पना:** शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

**शोध का परिसीमांकन:** प्रस्तुत शोध अध्ययन में कानपुर नगर एवं कानपुर देहात के 6-6 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है।

**शोध विधि:** प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

**शोध की जनसंख्या:** प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित कानपुर नगर एवं कानपुर देहात के कक्षा-11 में अध्ययनरत किशोर छात्राओं को जनसंख्या रूप में चयनित किया गया है।

**शोध का न्यादर्श:** प्रस्तुत शोध अध्ययन में कानपुर नगर एवं कानपुर देहात के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 की जिनकी आयु वर्ग (15-17 वर्ष) की 400 छात्राओं (200 शहरी 200 ग्रामीण) को लाटरी विधि के द्वारा न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।

**शोध उपकरण:** प्रस्तुत शोध में आंकड़ा संकलन हेतु डॉ. वी.पी. शर्मा एवं डॉ. अनुराधा गुप्ता की शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी सूची का प्रयोग किया गया है।

**शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी:** प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के अन्तर्गत प्रमाणिक विचलन, टी-टेस्ट, की गणना की गयी है।

## आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

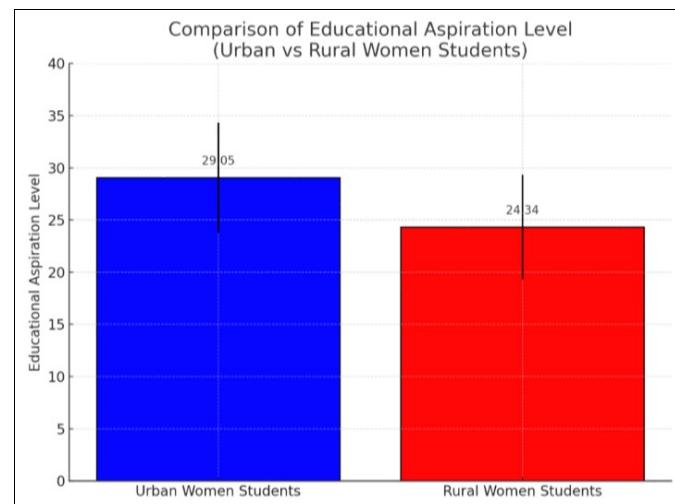
शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 200 छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 200 छात्राओं के मध्य शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी सूची को प्रशासित किया गया। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर मध्यमान (Mean) तथा मानक विचलन (Standard Deviation) तथा सार्थक अन्तर जात करने के उद्देश्य से टी-परीक्षण (T-Test) की गणना की गई। प्राप्त परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुए -

**तालिका 1:** शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

Group	N	Mean	SD	Mean diff	ESD	t
शहरी क्षेत्र	200	29.09	5.26	3.755	0.514	7.299*
ग्रामीण क्षेत्र	200	24.34	5.02			sjg.01 level

0.01 स्तर पर - सारणीमान 2.58, 0.05 स्तर पर सारणीमान = 1.96

उपरोक्त तालिका में शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में पाये जाने वाले मध्यमान स्तर एवं उनके अंतर का स्पष्टीकरण किया गया है। शहरी क्षेत्र के विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का मध्यमान 29.09 तथा मानक विचलन 5.26 पाया गया तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का मध्यमान 24.34 तथा मानक विचलन 5.02, पाया गया। इस परिणाम को बार चित्र-1 में इस प्रकार से दर्शाया गया है-



**बार चित्र 1**

उपरोक्त बार चित्र में शहरी क्षेत्र की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का मध्यमान ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्यमान से, 3.75 मान अधिक है तथा दोनों के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने पर टी मूल्य 7.29 प्राप्त हुआ जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीमान 2.58 से काफी अधिक है। अतः शहरी क्षेत्र की छात्राओं का शैक्षिक आकांक्षा स्तर ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में अधिक है। इससे यह प्रमाणित होता है कि वातावरण के आधार पर छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अंतर पाया जाता है। शहरी छात्राओं का शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अधिक होने का कारण बहुत कुछ सीमा तक माता-पिता की शिक्षा का स्तर उनका छात्राओं को मार्गदर्शन तथा प्रेरणा देना हो सकता है।

साथ ही शहरी विद्यालय एवं सामाजिक वातावरण में आधुनिकीकरण का अधिक प्रभाव पाया जाता है। संभवतः शहरी क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरण छात्राएँ 11 वीं कक्षा में आते ही भविष्य के सपने बुना प्रारम्भ कर देती हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयारियाँ प्रारम्भ कर देती हैं। ये छात्राएँ तकनीकी, मेडिकल एवं विधि तथा उच्च सेवाओं में जाने की आकांक्षा से विषयों का चयन एवं तैयारी शुरू कर देती है। उच्च शिक्षा के लिए उन्हें तमाम जानकारियों अपने विद्यालयों के शिक्षक, सहयोगियों, व्यावसायिक एवं शिक्षा सलाहकार केंद्रों से प्राप्त होती रहती है। वे अपने आप को किसी भी क्षेत्र में बालकों से कम नहीं समझती इसी कारण उनका शैक्षिक आकांक्षा स्तर अधिक होता है। सामाजिक वातावरण, विद्यालय, पारिवारिक कारण, माता-पिता का शैक्षिक स्तर तथा शिक्षा में दिया गया उनका प्रोत्साहन आदि इसके प्रमुख कारण हो सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं में उपरोक्त परिस्थितजन्य कारकों के अभाव में उनमें शैक्षिक आकांक्षा स्तर के कम हो जाने का कारण बन सकते हैं।

### **सन्दर्भ सूची:**

1. पाण्डेय, रामशकल: उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा -2
2. सारस्वत, मालती: शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद
3. भट्टनागर, आर.पी. और भट्टनागर मीनाक्षी: शिक्षा अनुसंधान, लायल बुक डिपो, मेरठ
4. अवस्थी, वन्दना (2002) “ए कोरिलेशन स्टडी ऑफ इन्टेलीजेन्स एंजाइटी, लेवल आफ एसीपरेशन, स्टडी हैबिट, सोशियो इकोनॉमिक स्टेट्स एण्ड कल्वरल सेटिंग ऑफ हाई एण्ड लो एचीवर्स ऑफ हाईस्कूल ऑफ कानपुर नगर एण्ड कानपुर देहात” पी.एच.-डी., सी.एस.जे.एम. विश्वविद्यालय, कानपुर नगर।
5. शर्मा, अंजली (2005)- “लेवल ऑफ एसपिरेशन ऑफ हाई एचीवर्स एण्ड लो एचीवर्स” प्राची जनरल ऑफ साइकोकल्चरल डाइमेन्सक्स वॉ-21 नं0-2 अक्टूबर 2005, 165-168
6. शर्मा, प्रेरणा (2006): “लेवल ऑफ एसपिरेशन एण्ड होम कन्डीशन ऑफ डिसटेन्ट लर्नर इन द कान्टेक्मट ऑफ देयर सेक्स” प्राची जनरल ऑफ साइको कल्चरल डाइमेन्सक्स, 2006 वॉ-22 (2) (1991-94)
7. पाण्डेय, निशा एवं श्रीवास्तव, सुषमा (2012) “शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की गणित विषय के प्रति रुचि, शैक्षिक आकांक्षा स्तर, स्वाध्याय आदत एवं आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन” पी.एच.-डी.-छत्रपति शाहू जी महाराज, महाराज, विश्वविद्यालय, कानपुर नगर
8. अहमद, अकील, एवं मलिक, मुद्दसिर हरामिद (2012)-“सेल्फ कान्सेट, लेवल आए एसडिशन एण्ड एकेडमिक एचीवर्मेन्ट आफ फिजिकली चेलेन्जः एण्ड नॉर्मल स्टूडेन्ट एट सेकप्डरी लेवल इन डिसट्रिक्ट बारामूला” रिसर्च आन हायूमनिटीज एण्ड सोशल साइंसेज ISSN 2224-5766, ISSN 2225-0484 Online) Vol.2 No.2. 2012) Google Scholar-
9. पालीवाल, अंश, एवं राठी, नन्दा (2016) - “एकेडमिक परफार्मेन्स एज ए फंक्शन ऑफ लेवल आफ एसपिरेशन एण्ड जेन्डर -ए कम्परेटिव स्टडी एमंग्स्ट डिफरेन्ट स्ट्रीम्स ऑफ एजुकेशन” द इन्टरनेशनल जनरल ऑफ इण्डियन साइकोलोजी (ISSN 2348-5396 (e) ISSN: 2349-3429 इश्यू -उ नं0-2, अप्रैल-जून (2006).

10. शर्मा, देविका एवं सिंह, अमीषा (2017) - “एजुकेशनल एसपिरेशन ऑक सेकेप्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू एकेडमिक एचीवर्मेन्ट” इन्टरनेशनल जनरल ऑफ सोशल साइंस एण्ड इकोनॉमिक्स इनवेन्शन (IJESSION) वॉ-३, इश्यू 2 मई 2017
11. राजा, सेन्थिल एवं पाण्डियन (2018) “स्टडी ऑन लेवल आफ एजूकेशनल ऐसपिरेशन मांफ हाईस्कूल स्टूडेन्स” इन्टरनेशनल जनरल ऑफ एडवॉन्सड साइनटिफिक रिसर्च एण्ड मैनेजमेन्ट, वॉ ०-३ इश्यू 12 दिसम्बर-2018,
12. कृष्ण के., नाथ शंभू, एवं कुमार बुशन (2015) “अनुसूचित जाति के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन” बहुविषयक अनुसंधान के लिए अन्तर्राष्ट्रीय जनरल, जनवरी 13, 2024
13. दास, आँकिता एवं राजेश वी.आर. (2024): “स्नातक छात्रों के बीच शैक्षिक आकांक्षा पर एक अध्ययन,” शोधकोश: दृश्य और प्रदर्शन कला की पत्रिका, 30 जून 2024